7/10/1966 शुक्रवार प्रातः क्लास

रिकॉर्ड :– छोड़ भी दे आकाश सिंहासन, इस धरती पर आ जा रे.....

ओमशांति। मीठे–2 रूहानी बच्चों ने ये गीत सुना। किसने कहा? बाप ने कहा बच्चों को कि बच्चों। ये गीत सुना बच्चों ने। जब अति दुःखधाम है तो फिर बुलाते हैं कि सुखधाम स्थापन करो। बच्चे जानते हैं कि भगवान ही स्वर्ग रचता है वा सुखधाम रचता है वा पावन दुनिया रचता है अथवा भगवान ही भगवती और भगवान का राज्य स्थापन करते हैं। भारत में था भगवती और भगवान का (...)। इन देवी–देवताओं को भगवती और भगवान भी कहते हैं। ऊँच ते ऊँच महिमा ये है। तो अभी भगवती और भगवान, वो तो ठहरे जैसे मालिक। किसके मालिक ठहरे? देखते हैं कि बच्चे कितने धनवान हैं, कितनी राजाई (...) और फिर राजाई में कभी भी कोई उपद्रव होवे नहीं; क्योंकि ईश्वर सर्व सर्वशक्तिवान है। इसलिए उनके राज्य में कोई उपद्रव होता ही नहीं है बिल्कुल ही। ये वर्सा ही ऐसा देते हैं बच्चों को। तो मीठे बच्चे, अभी जो भी बच्चे बने हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार, तो किनको तो बहुत खुशी है और कोई–2 तो बिचारे ज्ञान पूरा न उठाने के कारण, न वहाँ की खुशी तो न यहाँ की खुशी। उसी को फिर कहा जाता है– दोनों जहान से गए हुए; क्योंकि यहाँ आय करके बाप से वर्सा लेते–2 अगर गिर पड़ते हैं तो न वहाँ के रहे, न यहाँ के रहे। तो बच्चों को तो मालूम है अभी, दुनिया में तो कोई भी नहीं जानते हैं कि कोई भगवान आ करके.. .स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं; क्योंकि आते भी हैं गुप्त रूप में और दुनिया ज़रा भी, एक ज़रा भी उनको मालूम नहीं पड़ता है कि कोई भगवान यहाँ होना चाहिए इस समय में। इसलिए कहा जाता है क्योंकि अंधेरे में हैं, घोर अंधियारे में हैं। इसको कहा ही जाता है– घोर अंधियारा। जब 12 बजा रात को बनते हैं तो उसको फिर कहेंगे ना–घोर अंधियारा। देखो, वो तो कहते हैं ना– ए०एम०, पी०एम०। पी०एम० पूरा होता है घोर अंधियारा। ए०एम० शुरू होता है घोर सोझरा, सुबह। उनको कहा ही जाता है–रात या उनका और ही नाम कर देते हैं–मॉर्निंग। बस, अंग्रेज़ी में तो एक ही अक्षर है–मॉर्निंग और नाइट। तो अभी मॉर्निंग एण्ड नाइट का भी अक्षर जो बाप समझाते हैं मीठे बच्चे, जो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार वो समझते हैं और जानते हैं कि अभी हम जो नाइट है, वो पूरी होती है भक्ति की। अभी उन बच्चों में ज्ञान आ गया कि नाइट भक्ति की, जिसमें दुख ही दुख है। मनुष्य तो कहते हैं बरोबर कि भई, भक्ति के बाद भगवान मिलते हैं। अरे भई, सो तो ज़रूर है ना। जभी दुर्गति होती है तब सद्गति मिलती है। तो सद्गति के लिए ही कहा जाता है– भगवान आते हैं; क्योंकि अब मनुष्य की दुर्गति है। तो दुर्गति हो गई ना। भक्तिमार्ग दुर्गति हो गई। अभी कोई भक्ति को दुर्गति कहे तो बिगड़े ना। अभी इन बच्चों में, जो भी बाबा कहते हैं, हमेशा नम्बरवार तो ज़रूर कहते हैं। किसका खुशी का पारा अच्छा चढ़ा रहता है बहुत, अंतर की खुशी रहती है बहुत और मेहनत भी ऐसे ही खुशी से करते हैं बहुत। बस, कोई होवे तो हम बैठ करके किसको समझावें। तो उस आशा को पूरी करने के लिए भी बाप प्रबंध रच रहे हैं ये प्रदर्शनियों का। सो भी युक्तियाँ ऐसे रच रहे हैं जो समझते ही उनको पारा चढ़ जावे खुशी का। तो जब अच्छी तरह से बुद्धि में बैठ जाता है कि कहाँ ये (...)। अभी देखो, जिनके पास बहुत सुख है वो तो समझते हैं स्वर्ग यहाँ है। वो तो उनमें खुशी रहती है। इन बात में तो आवे भी नहीं बिल्कुल ही। उनके लिए तो बड़ी मुसीबत है। बच्चियों को शादी न कराना, बच्चों को शादी न कराना, ये तो हो ही नहीं सकता है। ये तो कोटन में कोई विरला जो इतना समझदार बने। देखो, देखते हैं ना कि बरोबर फॉलो फादर तो ठीक है शिवबाबा के अभी कि उनकी मत पर चलो। फिर मत पर कौन अच्छी तरह से चलते

हैं, फिर उनको फॉलो करो। मत पर जो अच्छी तरह से चल रहे हैं उसको फिर फॉलो करो। तो बाप ने समझाया कि देखो, ये बच्चा अच्छी तरह से चल रहे हैं। ये समझते हैं कि जो भी, हमारे भी भले बच्चे, वो अगर इस राह पर न चले, तो जैसे कि वो रावण के तरफ हैं, ये राम के तरफ से। ये तो बच्चा दुश्मन के तरफ और बाप दोस्त के तरफ और इकट्ठा चल नहीं सके। ये इतना बच्ची इसमें होता है। कहाँ वो छी–2 बगुला, विष पीने वाला और अमृत पीने वाला– वो इकट्ठे कैसे रह सकते हैं? इम्पॉसिबल है। तो देखो, सन्यासियों में हैं; परन्तु वो तो अकेले हैं ना। वो तो कोई आदि सनातन देवी–देवता पवित्र धर्म नहीं। ये भारत में आदि सनातन देवी–देवता पवित्र धर्म था। अभी बरोबर वो पतित धर्म है। ये तो गाते हैं अच्छी तरह से कि भारत पावन–पतित। अभी वही भारत फिर पतित बना है। तभी पुकारते हैं; परन्तु बिचारों को, तुम बच्चों को तो, जो भी अच्छी तरह से याद में रहते हैं और खुशी में रहते हैं कि अभी हम बाकी थोड़े रोज़ हैं। टाइम तो लगता है स्थापनायें करने में अपनी राजधानी– वो अंदर में ऐसा ख्याल करते रहते होंगे। श्रीमत पर अपनी राजधानी स्थापन करने में टाइम तो लगता है, विघ्न भी पड़ते हैं। अभी विघ्न कोई भी और लड़ाइयों में कि माया के नहीं पड़ते हैं, न कोई विघ्न पड़ते हैं। वो तो लड़ाई है। जिनमें ताकत है वो जीतते हैं, जिनमें वो जो इतना न ताकत होगी, राजाई छोड़कर भाग जाते हैं। भाग जाते हैं एकदम। देखो, जब अंग्रेज़ आए थे, कितने भागते थे! अपना किला–विला, घरबार छोड़ करके भाग जाते थे और यहाँ तो बात ही नहीं है। ये तो है ही गुप्त। हम कोई को भगाते नहीं, कोई के ऊपर चढ़ाई नहीं करते हैं। कुछ नहीं करते हैं। ये बाप आ करके (...) और जिसको याद करते हैं– हे दुख हर्ता, सुख कर्ता। अब वो तो एक के लिए होता है ना बच्चे। ये संन्यासी गुरु कोई दुख हर्ता, सुख कर्ता थोड़े ही हो सकते हैं। इनका संन्यास तो यहाँ तक है ना– बस, घर छोड़ करके जंगल में बैठना। सो भी इस पुरानी दुनिया में। जिसको फिर हद का संन्यास कहा जाता है। ये तो बेहद का संन्यास तो बेहद की खुशी। हद का संन्यास तो हद की खुशी। अभी ये भी तो समझते हैं बेहद की खुशी तो सिर्फ है न है– भगवती और भगवान। यहाँ तो ऐसे कहते रहते हैं मनुष्यों को– भगवती–भगवान; क्योंकि सर्वव्यापी है तो फिर यहाँ भगवती और भगवान कह देते हैं– हे भगवान, इधर आओ। बाकी वो कुछ शोभता नहीं है कि भगवान कहना किसको। सो भी जो हैं पतित, उनको तो जो आता है सो बोलते ही रहते हैं। तुमको तो एक–2 अक्षर बड़ा युक्ति से समझाना होता है। तो वो जो कहा जाता है ना– कोई भी चीज़ में, इसमें तो रात–दिन का फर्क है। तो बरोबर ये तो बिल्कुल कॉमन चीज़ है कि ये दुनिया नई और दुनिया पुरानी, रात–दिन का फर्क है। फिर जब नई दुनिया बने तो फिर रात–दिन का फर्क भेंट कैसे करें? नई दुनिया में भेंट नहीं की जाती है, कोई से भी। पुरानी दुनिया में भेंट की जाती है। समझा ना बच्ची! नई दुनिया वालों को ये मालूम नहीं पड़ेगा कि हम कोई पुराना होने वाले हैं या पुरानी दुनिया में क्या होता होगा। कुछ होगा बच्ची उनको? नई दुनिया वालों को फिर ये सभी बातें भूल जाती हैं। तुम जो पुरानी दुनिया वाले हो उनको बाबा ने आ करके सब समझाया है। तभी अनुभव होता है कि उफ! स्वर्ग तो फिर भी स्वर्ग है और ये नर्क तो फिर भी नर्क है। हम तो पुकारते रहते थे जिसको, वो जभी आ करके मिला है, तो तो फिर उनसे अच्छी तरह से अपना वर्सा लेना चाहिए। अभी मिला है उनको जिन्होंने पुरुषार्थ आकर किया है। मिलना भी उनको है जिन्होंने कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया था और जैसा किया था। उनमें भी नम्बरवार, जैसे बाप कहते रहते हैं

ना– बच्ची, क्या था, ये क्या रहने हैं .....। जैसे गाया जाता है कि काँटे हैं। तो विवेक कहता है कि हाँ, बरोबर एक/दो को काँटे लगाते थे, और क्या करते थे! पीछे क्रोध भी तो कभी थोड़ा–बहुत तो आता ही है। गन्द तो नम्बरवन है ना विकार का, और फिर भी ये तो क्या है, ये तो पुरानी दुनिया है ना बच्ची और नई दुनिया ज़रूर अच्छी है। मनुष्य मरते हैं तभी भी बोलते हैं– भई गया नई दुनिया में। अभी नई दुनिया में तो कोई जा ही नहीं सकते हैं। अभी स्वर्ग किसको कहा जाता है बिचारों को मालूम नहीं। नहीं तो भला कह देवे ना– गया नई दुनिया में, स्वर्ग में। अभी नई दुनिया में, स्वर्ग में, तो जभी पुरानी दुनिया खतम होवे तभी तो नई दुनिया, स्वर्ग आवे ना। ऐसे ही मुख से कह देते हैं कि स्वर्गवासी हुआ। अरे भई, स्वर्गवासी नई दुनिया होती है। स्वर्गवासी कोई यहाँ बीच में थोड़े ही रखी हुई है। तो तुम बच्चे जानते हो अच्छी तरह से कि स्वर्ग भी यहाँ होता है। अभी देखो कहते हैं– स्वर्ग भी यहाँ होता है, नर्क भी यहाँ होता है ना– ये अक्षर वो पकड़ लेते हैं कि यहाँ ही स्वर्ग है, यहाँ ही नर्क है। जिसको सुख है वो स्वर्ग में है; जिसको दुख है सो नर्क में है; परन्तु ऐसा नहीं गाया जाता है कि यहाँ नहीं (...)। ये जब भारत नया है तो स्वर्ग है। सतयुग है तो स्वर्ग है। जभी भारत पुराना है तो कलहयुग है। फिर उसको नर्क कहा जाता है। तो यहाँ ही माना इस दुनिया में। दुनिया दूसरी कोई है नहीं– ऊपर या नीचे। इसी दुनिया में जब नई दुनिया है तो स्वर्ग है, जब पुरानी दुनिया है तो नर्क है। अभी वो भी तो सिद्ध हुआ कि बरोबर जब नई दुनिया है तो इनका राज्य था, जिसको स्वर्ग कहा जाता है। फिर पुरानी दुनिया है तो इनका राज्य ही नहीं है। इनका ... हो ही कैसे सकता है! ये जो गाया हुआ है कि 84 जन्म मनुष्य लेते हैं। बाप ने आ करके बताया है। अभी प्रैक्टिकल में, सुनते तो हैं कि भगवानुवाच्य– मैं तुझे 84 (...)। जब–2 धर्म की ग्लानि हुई थी, जब गीता सुनाते थे, तब कहते थे– ऐसे कहेंगे ना। मैं तुझे अभी राजाओं का राजा बनाता हूँ, स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। इसलिए विनाश है पुराने नर्क का। नर्क का तो ज़रूर विनाश होना चाहिए ना बच्चे। तो कहता था बरोबर। अब वो कौन था, कब कहता था, किसको भी पता नहीं है। नाम दे दिया कृष्ण का। लड़ाइयाँ लगवाय दीं, फलाना कर दी। लड़ाई भी तो है। कोई ऐसा नहीं है (...); पर किसके बीच में लड़ाइयाँ हैं? ये भी तो दुनिया बिचारे (...) ये शास्त्रों में तो उल्टा–सुल्टा लगा दिया है। पलटनें खड़ी कर दी हैं। अभी तुम्हारी पाण्डवों की कोई पलटन हो सकती है बच्ची? पाण्डवों की कोई पलटन है नहीं बिल्कुल ही। पलटनें हैं ज़रूर माताओं की और कन्याओं की। पलटनें बनती हैं बहुत, जब ये होता है, इनका परेड (सेना प्रदर्शन) होता है या बड़ा दिन होता है, तो बच्ची माताओं की पलटनें बड़ी आती हैं, खड़ी हो जाती हैं टिपटॉप .... जैसे उनकी लड़ाई, बन्दूक वगैरह सब उनको देते हैं। तो शोभा पाती है देखने में। बहुत उनसे उनकी पलटन शोभा पाती है। फीमेल की तो हमेशा शोभा होती है उनसे। उनकी एक्टीविटी वगैरह ये जब होती हैं तो नई बात देखते हैं। तो यहाँ तो तुम्हारी कोई ये पलटन–फलटन तो है ही नहीं। उनको क्या मालूम, ये शिव–शक्ति सेना। अभी शिवशक्ति सेना, शिवबाबा तो कभी कोई आ करके हिंसा नहीं कराएँगे। अभी तुम जानते हो कि हम शिवबाबा की सेना है। अभी हिंसा तो कोई नहीं ना बच्ची। ना। बाप कितना अहिंसक बनाते हैं– डबल अहिंसक। न राजाई लेने के लिए, कोई को कुछ भी घूसा मारना या मुट्ठी मारना, कुछ भी नहीं। इसको ही कहा जाता है 100 परसेन्ट नॉनवायोलेन्स और उनको कहा जाएगा फिर 100 परसेन्ट वायोलेन्स; क्योंकि इस समय में वायोलेन्स 100 परसेन्ट एक्युरेट है। देखो, कितनी वायोलेन्स है! एक

बॉम्ब से एकदम (...)। ये वायोलेन्स की भी तो (...)। अरे, तो इसको कहा जाता है– बेहद की वायोलेन्स। तो बेहद की वायोलेन्स और बेहद की नॉनवायोलेन्स– रात–दिन का फर्क है बिल्कुल ही। वहाँ कितने आवाज़ होते हैं– ठका–2 बॉम्ब्स का, उनका। क्या हो जाते हैं बिल्कुल ही। बन्दूकें छूटती हैं और बॉम्ब्स गिरते हैं, ठका–ठुकी होती है ना। वहाँ बिल्कुल बेहद की ठका–ठुकी होने की है और तुम इस तरफ में बेहद के साइलेन्स में एकदम। जितना जास्ती तैयारी होती जाती है वहाँ ठका–ठक की मारने की, नैचुरल कैलेमिटीज़ में भी तो बॉम्ब्स से धरती धूरती है तो ठका होते हैं, बरसात पड़ती है तो मूसलों की ... तभी भी ठका होते हैं, कितना आवाज़ होते हैं उस वायोलेन्स से विनाश में और फिर स्थापना में साइलेन्स कितनी! बिल्कुल साइलेन्स। तुम देखो कितनी साइलेन्स में बैठे हो एकदम और वहाँ कितनी वायोलेन्स है। तो रात–दिन का फर्क है ना।...देखो, साइलेन्स में कितना बल है। तो यहाँ बल का मालूम पड़ता है। फिर ये बल का मालूम अभी पड़ता है। सब बात की निचोड़ अब होती है। सब कुछ तुम बच्चे अभी समझ सकते हो। अनुभवी हो। प्रैक्टिकल लाइफ है तुम्हारी कि हम .... बाप से योगबल से कैसे वर्सा पाय रहे हैं। है तो योगबल ना बच्चे और योगबल से, बाबा की याद से, बाबा को याद करेंगे, जब ये अल्फ को याद करते हो, बे...स्वर्ग की बादशाही मिलती है। ये देखो, सहज ... कैसा है! और वादा है, मोस्ट बिलवेड बाबा आते हैं। अरे बच्चे, मोस्ट बिलवेड बाबा आते हैं। अरे, बाबा क्या सौगात ले जाते हैं; क्योंकि आते तो दूर देश से है ना। जैसे विलायत में रहने वाले बाप आजकल आते हैं ना। कोई अमेरिका, कोई जर्मनी, कोई कहाँ–2 दूर–2 जाते हैं। जब उनके बच्चे होते हैं तो खुश होते हैं– बाबा हमारे लिए विलायत की सौगातें लाएँगे। ये भारत की नहीं, विलायत की सौगा(त)। बहुत अच्छी–2 सौगातें होती हैं। यहाँ तो फिर बाबा आते ज़रूर हैं। ...वो तो बाबाएँ आते रहते हैं, वो तो हैं ही यहाँ। ये बाबा एक ही बार आते हैं और फिर कौन–सी सौगात ले आते हैं? वो बोलता है– मैं बच्चों के लिए अभी पॉकेट में नहीं, मैं तीरी पर बहिस्त ले आया हूँ। जैसे वो दिखलाते हैं ना–रावण(हनूमान) पहाड़ ले आया। तीरी पर संजीवनी बूटियों का पहाड़ ले आया। अभी पहाड़ तो उठ नहीं सकता है ना। अभी वो भी कहते हैं– मैं बहिस्त ले आया। तो बहिस्त कोई तीरी पर उठता है क्या.. .? ये समझ की बात होती है। बाबा हमारे लिए नम्बरवन सौगात लाई(लाए) है कि हम आया ही हुआ हूँ तुमको पावन दुनिया का मालिक बनाने, जो तुम सभी चाहते हो; परन्तु जब पतित हो, पावन बनना चाहिए ना। अच्छा, पावन बनने(बनाने) के लिए भी तो मैं नामी–ग्रामी हूँ। गाते रहते थे– पतित–पावन और फिर कैसे वो पतित से पावन बनाते हैं? वो गाया हुआ है कि योगबल से। प्राचीन भारत का योगबल किसने सिखलाया था? भई, गीता के भगवान ने सिखलाया था। उस योगबल से भगवान ने आ करके बादशाही दिया होगा, थी और अभी नहीं है। अभी ये बुद्धि में बाप फिर से बिठाते हैं कि जबकि तुम कहते हो– हम हैविनली गॉड फादर के बच्चे हैं, स्वर्ग के स्थापन करने वाले बच्चे हैं और बाप नई दुनिया ही स्थापन करते हैं। ...ये दुनिया अब पुरानी है। ज़रूर नई दुनिया जब स्थापन हुई होगी तो कोई को तो स्वर्ग की बादशाही मिली हुई होगी ना और जब कोई को भी स्वर्ग की बादशाही मिली हुई होगी, तो औरों को भी तो (...)। ऐसे थोड़े ही है सिर्फ स्वर्ग में रहने वाले को बाप ने कुछ दिया होगा। बाकी जो इतने मनुष्य हैं उनको भी तो कुछ दिया होगा ना। तो फिर कहते हैं कि उनको फिर देखो मिला हुआ है ड्रामा के प्लैन अनुसार मुक्ति का धाम। यानी जीवनमुक्त तो सब बन गए ना। जीवन जो माया रावण के बन्ध में है,

वो तो मुक्त हो गया ना। तो ये तो तुम बच्चे ही जानते हो, एक ही सद्गति दाता है, दूसरा न कोई। इसलिए बाबा ने इशारा भी दिया कई–2 बच्चों को कि भई, गवर्मेण्ट में ये भी एक रड़ियाँ/पुकार भेजो कि भई, भारत...। तो ये शिव परमपिता परमात्मा जभी आते हैं, उसको ही हैविनली गॉड फादर कहा जाता है, पतित–पावन कहा जाता है। सर्व मनुष्य मात्र की सद्गति, सर्व सृष्टि की सद्गति; क्योंकि सारी पुरानी दुनिया की सद्गति हो करके नई बनती है यानी .... बनती है। तो ये कौन हैं, जो कहते हैं– हम जगत के गुरु हैं? ये तो झूठ बोलते हैं; क्योंकि इनके ऊपर भी तो केस होना चाहिए, प्रूफ होना चाहिए। अभी तुम तो प्रूव कर सकती हो। वो तो बिचारे कुछ कह ही नहीं सकेंगे; क्योंकि वो हैं ही हठयोगी। प्लैन में ही तुम दिखाओ– ये आते ही हैं यहाँ और आएँगे भी यहीं। ये क्या जानें राजयोग से! जबकि ये संन्यासी तो यहाँ राजयोग सिखलाने वाले हैं ही नहीं, तो राजयोग तो बाप आकर सिखलाएँगे ना। तो इसलिए उठाने के लिए, उठे या न उठे, ये कोर्ट में प्रूव के लिए जावे या न जावे। पुरुषार्थ कर–करके बच्चों को (...)। देखो, सब बच्चों को बोलता है। जो भी प्रदर्शनी होती है, उनमें जो–2 भी अच्छे–2 हैं। उसमें भी खास जो कहते हैं बरोबर– गीता का भगवान कृष्ण नहीं है, परमपिता परमात्मा शिव है। तो देखो, सब शास्त्र, गीता खण्डन तो भागवत वगैरह सब खण्डन हो जाते हैं एकदम्। अच्छा, अभी ये तो चाहिए ना, बड़े–2 आदमियों की बात पूछे ना, गरीबों की ... पूछते नहीं आजकल। तुलसीदास गरीब की कोई न पूछे बात। अभी की बात है ना बच्ची। तो बच्चे जब प्रदर्शनी में भी रहते हैं, तो भी कोशिश यही करें कि भई, गीता का भगवान, तो भगवान एक है ना और वही बाप है और उनसे ही वर्सा मिलता है और भारत को उनसे ही स्वर्ग का वर्सा मिलता है। स्वर्ग की स्थापना वो करते हैं। स्वर्ग था ना भारत। आज से 3000 बरस (...) भारत स्वर्ग था। ये देखो, उनके बादशाह बैठे हुए हैं, जिनके हम मंदिर (...) ये सब पूजा होती रहती है। अभी उनका राज्य है नहीं। राज्य है रावण का, जो है दुश्मन। वो दुश्मन को बरस ब बरस जलाते रहते हैं, जलता नहीं है; क्योंकि राज्य है उनका। नहीं जलता है माना कि वो है ही है। अच्छा, जब इनका राज्य आएगा, तब तो उनको वो होगा ही नहीं। उनको जलाने की दरकार ही क्या है! अभी आ करके बरस–2 (...) ये मुआ मरता ही नहीं है। फिर उनका बुता बनाय करके मारते हैं, फिर भी देखते हैं मरता नहीं है। तो फिर मारते हैं। तो ज़रूर रावण का राज्य चल ही रहा है। तो रावण राज्य को ही राक्षस राज्य कहा जाए, आसुरी राज्य कहा जाए। तो तुम लोग, सिर्फ तुम लोग हैं, दूसरा कोई नहीं जानते हैं कि ये रावण, वही एनिमी है अभी। अभी इस रावण पर जीत राम आ करके पहनाते हैं। कैसे पहनाते हैं? वो तो बिल्कुल ही सहज पहनाते हैं। मन्मनाभव, मुझे याद करो तो जो तुम्हारे पास पाप हैं वो भी नाश हो जाएगा। जब तुम लायक बन जाएँगे तब फिर तुम्हारे लिए लायक सृष्टि चाहिए, नई दुनिया चाहिए।...विनाश भी ऑटोमैटिकली ज़रूर होगा और लिखा हुआ है ड्रामा में कि विनाश भी हुआ था बरोबर। हुआ था, फिर होगा। तो ज़रूर फिर होगा। महाभारत की लड़ाई लगती ही तब है जबकि रावण का राज्य खलास होता है। राम की राजधानी ... होती है। हायहायकार के बाद फिर आधा कल्प जयजयकार होती है। फिर रावण राज्य में शुरू होती है हाहाकार। उसमें भी बाप समझाते हैं– हाहाकार शुरू होती है पहले तो सतोप्रधान, फिर सतो,रजो,तमो। अभी तो बिल्कुल ही हाहाकार; क्योंकि हाहाकार के पीछे जल्दी होती है जयजयकार। सो तो ज़रूर संगम चाहिए। संगम पर ज़रूर जयजयकार मनाने वाला बाप चाहिए, जो विनाश, स्थापना,

विनाश (...)। तो विनाश माना ही हाहाकार। विनाश के बाद फिर जयजयकार ही है। जयजयकार का घिण्ड बजते हैं– ऐसे कहते हैं। अभी कोई घिण्ड की तो बात नहीं है। ये तो दुनिया बदलती है। पुरानी दुनिया खतम हो नई दुनिया बदलती है। जैसे पुराना घर तोड़ करके नया बनाया जाता है। पहले बनाया जाता है, पीछे तोड़ा जाता है। (...) पहले होती है और विनाश पीछे होता है। तो स्थापना तो हो रही है ज़रूर; क्योंकि ये जो लड़ाई है उस समय में, ये भी तो लड़ाई बहुत समय में (...)। ये बॉम्ब्स वगैरह बनाते रहते हैं ना। अभी भी तो बनाते रहेंगे ना बच्ची। तैयारी तो हो रही है ना। तो रावण के राज्य को (...)। ये तो मारते हैं ना फटाके और वो जब बनाते हैं। देखो, अभी भी दशहरा आएगा ना, तो रावण का एफीजी निकालेंगे। अभी ये हद की बात, तुम्हारे पास यहाँ बेहद की बात। कि रावण का राज्य बेहद दुनिया पर है; परन्तु यहाँ उनको जलाते हैं; क्योंकि यहाँ रावण पर जीत पहननी है। हैविन यहाँ स्थापन होता है। रामराज्य यहाँ स्थापन हो चुका। इसलिए रावण को यहीं जलाते हैं। .....सारा भारत। सिर्फ यहाँ नहीं, देखो मैसूर में जाओ तो कैसे मनाते हैं। तो तुम्हारी बुद्धि में अभी क्या होता है, क्या करते हैं ये महाराजा मैसूर का। ये बहुत इन्विटेशन भेज देते हैं कि हम क्या बेवकूफी का खेल मनाते हैं, आ करके देखो; परन्तु वो बिचारे कुछ समझते थोड़े ही हैं। वो समझते हैं इनका रसम–रिवाज़ है। ये कोई इनका उत्सव है। बुद्धि न उनमें है, न उनमें है। अभी तुम तो कहेंगे ना कि उनको अगर तुम बैठकर समझाओ कि ये क्या करते हैं! तो उनको हँसी भी आएगी और वो कहेंगे– ये तो बड़ी बेवकूफी है, नॉनसेन्स है एकदम! अच्छा, नॉनसेन्स हो क्या? बस, और तो कुछ नहीं कहेंगे ना। बाकी बैठ करके समझेंगे थोड़े ही। ऐसे ही तुम किसको भी समझाते हो कि ये भई नॉनसेन्स नहीं है! ये रावण तो होता ही नहीं है, इतना लम्बा–चौड़ा ये जलाते हैं, बन्दर कहाँ से आया? बोला– आप बिल्कुल सच बोलते हैं। अच्छा, सच बोलते हैं तो फिर क्या! .....कोई फायदा ..... तुम बैठ करके अभी रामराज्य लो। तुम अपने ये पाँच विकार रूपी जो तुम्हारे पास हैं वो दान दे दो तो तुम्हारे ग्रहण छूट जाए। दे दान तो छूटे ग्रहण। 5 विकार का दान दे दो तो ग्रहण छूटे। तो ये जो चंद्रमा का ग्रहण लगता है, दे दान तो छूटे ग्रहण। अभी उनको ग्रहण थोड़े ही कुछ लगता है। ये तो समझाने के लिए सभी बातें बाप आकर समझाते हैं। ये तो धरती का परछाया सब कुछ पड़ता है, ये तो अनेक होते हैं और ये जो ग्रहण लग जाता है सारी इस पृथ्वी को, ये तो 5 विकार रूपी ग्रहण है, सो लगते–3 इस दुनिया को आधाकल्प नहीं, फुलकल्प लग जाता है। इसको लगते हैं, जिनमें लगा हुआ है कि लगता तो अनेक बार है। तुमने बहुत दफा ग्रहण देखा होगा चंद्रमा को या सूर्य को और ये है सारी दुनिया को ग्रहण लगता है। एकदम काली बिल्कुल हो जाती है। हूबहू जैसे चंद्रमा, लीक जाकर रहती है। ये भी लीक जाकर रहती है; क्योंकि हम रहें तो सही ना कहाँ भी। वो ऐसे समझो जैसे कि वो लीक है उस समय में। ...बहुत अथाह–अपार खुशी होनी चाहिए कि बाकी थोड़ा रोज़ है नाटकों के माफिक। तुम एक्टर हो। अभी तुम समझ गए हैं– हम एक्टर्स हैं और एक्टर्स होने के कारण तुम क्रियेटर, डायरैक्टर, प्रिंसीपल एक्टर्स, ये सभी, ये ड्रामा के आदि,मध्य,अंत, युग वगैरह, ये जो भी हैं, नाटक बना हुआ हुआ है, तुम बच्चे सिर्फ जानते हो और दुनिया में कोई भी एक्टर होते हुए, कोई भी कुछ भी नहीं जानते हैं बिल्कुल। एकदम तुच्छ बुद्धि जिसको कहा जाए। वास्ट (विशाल) फर्क है ना बच्ची। तो बुद्धि के ऊपर है ना। तो देखो, तुम्हारी बुद्धि, जैसे पारसनाथ ने पारस बुद्धि (...)। उसके बुद्धि में ये सारा ज्ञान था जो तुम्हारी आत्मा में ठूँसा है, ठुका है अभी। तो तुम

ज्ञान के सागर हो जाने के कारण, तो ज्ञान के सागर हो गए, तो बच्चे बन गए, तो बाप तो उनको ज़रूर स्वर्ग में ही भेज देंगे ना फिर...। तो इस ज्ञान से (...) और ज्ञान कहा जाता है– नॉलेज इज़ सोर्स ऑफ इन्कम और ये भी नॉलेज है और इस नॉलेज को कहा जाता है– स्प्रिचुअल नॉलेज यानी रूहानी नॉलेज। यानी बाप नॉलेज देते हैं। मनुष्य, मनुष्यों को नॉलेज नहीं देते हैं। दुनिया में सब मनुष्य मनुष्यों को नॉलेज देते हैं, कोई भी– स्कूल की, पढ़ाई की या इस ज्ञान की, मनुष्यों को देते हैं। तुमको एक मनुष्य नहीं है, वो तो बाप है सभी का, रूह, सुप्रीम रूह। वो आ करके ज्ञान देते हैं और एक ही बार देते हैं। वो तो बहुत देते रहते हैं ज्ञान। मनुष्य तो बहुत एक/दो को ज्ञान देते हैं– ये ...गीता,वेद,ग्रंथ,उपनिषद। वो तो कोई ज्ञान नहीं है ना बच्ची। उसको भक्ति कहेंगे। भक्ति, एक तो भक्ति पूजा भला, दूसरी फिर ये दंत–कथाएँ, जिसको कथाएँ कहा जाता है ना बच्ची। देखो, सत्यनारायण की कथा, रामायण की कथा। यानी जो पास्ट में हो गए हैं, उसका बैठ करके कुछ–न–कुछ बनाया है, उसको कथा (...)। इसको कोई कथा थोड़े ही है, ये पढ़ाई (...)। ये कथा नहीं है। पढ़ाई में हिस्ट्री–जॉग्राफी ज़रूर आती है। तो देखो, पढ़ाई में तुम ये वर्ल्ड की हिस्ट्री और जॉग्राफी प्रिंसीपल अच्छी तरह से जान जा(ते)। बाकी तो बहुत ही कुछ जानते हो– कैसे इस्लामी आता है, बौद्धी आता है...। जब फलाने थे तो वो नहीं थे, वो थे तो वो नहीं थे और कैसे तुम समझाते हैं– 5(000) बरस के पहले बाबा ने आकर कहा था– भई, यूरोपवासी यादव (...)। अब यूरोपवासी यादव जब गीता पढ़ते हैं तो उनको कोई समझ में थोड़े ही आता है कि गीता में जो लिखा हुआ है यूरोपवासी यादव, उन्होंने मूसल इन्वेन्ट कर दिए थे। वो तो अभी मालूम है ना; परन्तु कोई बुद्धि में थोड़े ही बैठता है उनके। अभी यादव,कौरव,पाण्डव किसको कहा जाता है? जब हैं प्रैक्टिकल में तभी तुम समझते हो। नहीं तो दुनिया क्या जाने! तुम जानते हो। कल्प पहले भी तुम(ने) जाना था कि हम पाण्डव थे और ये कौरव थे और वो यादव थे यूरोपवासी। उन्होंने वो मूसल इन्वेन्ट किए थे और विनाश हुआ था। अभी फिर भी वही बात है और बाकी विनाश के बाद क्या हुआ था? गीता में तो प्रलय लगी पड़ी है। सब चले गए..., दो/तीन जो बचे। सब खतम हुए, बाकी बचे सो पहाड़ पर गए और प्रलय हो गई। ये तो बात है नहीं ना। तो गीता वालों की बुद्धि में, भागवत वालों की बुद्धि में, वेद वालों की बुद्धि में क्या है, तुम्हारी बुद्धि में क्या है! ये तो समझ सकती हो कि उनकी बुद्धि में क्या है; क्योंकि वही है जो तुम्हारी बुद्धि में आगे था। अभी तुम्हारी बुद्धि में वो कचड़ा निकल गया है। जानते हो, उसको निकाल दिया...। जानते ज़रूर हो। ऐसे नहीं कि निकाल दिया, जानते हो और ये समझ गए कि ये कचड़ा पड़ा हुआ था भक्ति का, जिसको भूसा कहा जाता है। ऐसे थोड़े ही है भूसे को भूल जाते हो। नहीं, भूसे को याद करते हो कि बरोबर ये (...); क्योंकि सदैव दुनिया में भूसा चला आ रहा है। भर रहे हैं हरेक की बुद्धि में और तुम्हारी बुद्धि में वो भूसा निकला नहीं है, वो भूसा है; परन्तु नहीं, ये नई बात– वो निकलती जाती है, उसको भूसा समझा जाता है; इनको ज्ञान समझा जाता है। उसको पत्थर समझा जाता है; इनको (...)। तो पत्थर को याद तो रहती है ना। ये पत्थर पढ़ते थे हम, ये सभी यज्ञ,तप,दान,पुण्य। तुम्हारे से जभी कोई पूछते भी हैं– तुम शास्त्रों को मानते हो? हाँ, हम मानते हैं भक्तिमार्ग के शास्त्रों को। हम ये ज़रूर कहते हैं कि भक्तिमार्ग के शास्त्र भक्ति के हैं, दुर्गति के हैं; परन्तु ज्ञान का शास्त्र तो बाप है। अब वो शास्त्र नहीं, वो आ करके जो सुनाते हैं उसको कहा जाता है–ज्ञान; क्योंकि वही ज्ञान का सागर है। जब वो ज्ञान का सागर है तो हम इसको भक्ति के

सागर कहेंगे ना। तो ये है भक्ति; वो है ज्ञान। तो ज्ञान आधाकल्प; भक्ति आधाकल्प। बस, भक्ति अभी मुर्दाबाद होएगी, ज्ञान जिन्दाबाद हो रहा है। तो ज्ञान के लिए फिर ये बादशाही सतयुग चाहिए। ये पुरानी दुनिया खतम होने की है, उनके लिए विनाश खड़ा है। विनाश तो बिल्कुल भी इज़ी तुमको समझाना है। नथिंग न्यू। (...) भी लिखते हो– विनाशकाले विपरीत बुद्धि नथिंग न्यू, भगवानुवाच्य और वहाँ क्लीयर लिखना चाहिए– शिव भगवान के साथ विपरीत बुद्धि। विपरीत बुद्धि जब बच्चों को समझाना है; क्योंकि बच्चे प्रदर्शनी (में) समझाते हैं ना– विपरीत बुद्धि क्यों लिखा है? .... जानते ही नहीं हो। उनको कहते हो– कुत्ते में, बिल्ली में, तो विपरीत (...), वो तो गाली है ना। कि तुम मनुष्यों को गाली देते हैं; क्योंकि उनके साथ विपरीत बुद्धि हैं। यानी प्रीत नहीं, दुश्मनी। विपरीत कहा जाता है–दुश्मनी। तो तुम्हारी भगवान के साथ दुश्मनी है कि वो कुत्ते–बिल्ले में, फलाने में। इन्सल्ट कहते(करते) रहे हो। हमारी तो बिल्कुल प्रीत है। बाप तो कहते हैं– मेरे सिवाय तो और कोई को याद भी न करो। याद भी नहीं पड़ता है तुमको– अवर संग बुद्धि का योग तोड़ सिर्फ एक मुझ संग जोड़। सब(को) आ करके कहते हैं ना। रस्ता तो बताते हैं ना कि ऐसे मेरे साथ योग लगाओ। अपन को आत्मा निश्चय करो और मेरे साथ योग लगाओ तो तुम्हारे ऊपर जो ये पाप का बोझा है, वो सभी भस्म हो जाएगा। अरे, इसको कहा जाता है– भारत का प्राचीन, 5000 बरस पहले वाला। वो योग जो भगवान ने सिखलाया है, कृष्ण ने नहीं सिखलाया। स्थापनायें जो करने वाले होते हैं वो पतित नहीं होते हैं। कृष्ण तो इस समय में पतित है; क्योंकि उनको कहा जाता है कि तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। तुम पहले–2 सतयुग में थे, फिर त्रेता में थे, द्वापर में, अभी कलहयुग में, अंतिम जन्म हो तुम्हारी। बहुत जन्म के अंत के जन्म के भी अंत में मैं तुम्हारे में प्रवेश करता हूँ। किसको कहा? अब तुम(ने) जाना ना कि कृष्ण की जो आत्मा थी, जिसने 84 जन्म लिया, उसके बहुत जन्म के अंत के जन्म में प्रवेश किया। उसकी ....भी बताते हैं। उसमें प्रवेश किया है तो फिर बैठ करके तुम बच्चों को अपना ब्रह्मामुखवंशावली बनाया, राज्य देता हूँ। तो कितना क्लीयर समझने की बात बताते हैं। 84 जन्म भी तो चाहिए ना, जो कैसे मिलते हैं? नहीं तो मनुष्यों को मालूम नहीं है पुनर्जन्म का। तो भला किसको तभी मालूम होगा? बाप को मालूम है सब। इसलिए वो आ करके बताया। और कोई मनुष्य जानते नहीं, बताय ही नहीं सकेंगे। खुद बैठा हुआ है ना, वो क्या जानता था। ...कुछ भी, 84 जन्म का वो अपना चक्र जान गया। जानते थे ये कुछ? तुम जानते थे? कुछ भी नहीं जानते थे। तो ये भारतवासियों को ही समझाना पड़े कि भई, ये 84 का चक्र पूरा होता है। इसलिए फिर से नई दुनिया के लिए बाप आया हुआ है। देखो, वही महाभारत की लड़ाई खड़ी ही है और महाभारत लड़ाई ने ही स्वर्ग के गेट्स खोले थे और खोले थे तब जब बाप ने आ करके दैवी राजयोग सिखलाया था। वो तो नाम ही है– राजयोग। मनुष्यों को देवता बनाया। अच्छा चलो बच्ची, टोली ले आओ।

मात–पिता, बापदादा यादप्यार दे रहे हैं। हाँ, मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बापदादा का, रूहानी बाप मार्फत दादा के, इसलिए बापदादा रोज़–2 तो नहीं समझाना पड़ता है। रूहानी बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग। (बच्चों ने कहा– गुडमॉर्निंग)